UNIVERSAL LIBRARY
OU_180066
UNIVERSAL LIBRARY

सत्साहित्य-प्रकाशन

नवयुवकों से दो बातें

प्रिंस क्रोपॉटकिन

●

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,

नई दिल्ली

आठवीं बार : १९६०

मूल्य

५० [redacted] नये पैसे

मुद्रक

सत्यपाल धवन,

दी सैंट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस,

दिल्ली

प्रकाशकीय

भारतीय पाठक क्रोपॉटकिन के नाम से भली-भांति परिचित हैं; उनकी गणना संसार के महान् विचारकों में होती है। अपनी रचनाओं के द्वारा उन्होंने पाठकों को बड़ी ही विचार-प्रेरक सामग्री प्रदान की है।

प्रस्तुत पुस्तक विद्वान लेखक की अत्यन्त उपयोगी एवं लोकप्रिय कृति है। इसमें उन्होंने बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति को, भले ही वह किसी भी क्षेत्र में काम करता हो, क्या करना चाहिए। साथ ही उन्होंने उस स्वस्थ समाज की भी कल्पना दी है, जिसकी स्थापना के लिए हर विवेकशील नागरिक को प्रयत्न करना चाहिए।

लेखक के विचार इतने सरल और सुलझे हुए हैं कि सामान्य पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी उन्हें समझकर उनसे लाभ उठा सकता है।

पुस्तक का यह आठवां संस्करण है। इससे पता चलता है कि इसे पाठकों ने पसंद किया है। हमें विश्वास है कि आगे इस पुस्तक का और भी व्यापक प्रसार होगा।

—मंत्री

प्रस्तावना

आज मैं युवकों से कुछ बातें कहना चाहता हूं। बूढ़े लोगों को— दरअसल मेरा मतलब है दिल और दिमाग के बूढ़ों से—इसके पढ़ने का कष्ट न उठाना चाहिए; क्योंकि इसके पढ़ने से सिर्फ उनकी आंखें थकेंगी और फायदा कुछ भी न होगा।

मैं कल्पना करता हूं कि तुम्हारी उमर अठारह-बीस वर्ष की है, तुम अपने शिक्षाकाल या विद्यार्थी-जीवन को समाप्त कर चुके हो और अब सांसारिक जीवन में प्रवेश कर रहे हो। मैं यह भी माने लेता हूं कि तुम्हारा दिमाग अंधविश्वास से, जिसको तुम्हारे शिक्षकों ने तुम्हारे भीतर भरने की कोशिश की थी, मुक्त है तुम नरक-स्वर्ग की बातों से नहीं डरते और तुम मुल्लाओं तथा पुजारियों की थोथी बातों को सुनने नहीं जाते। साथ ही तुम उन दिखावटी लोगों में से भी नहीं हो, जो पतनशील जातियों में प्रायः पैदा हुआ करते हैं, जो अपने चमकीले कपड़ों और बंदर की-सी शक्ल को मेले-तमाशों में दिखलाया करते हैं और जो छोटी उमर से ही किसी भी तरह सुख भोगने की बेहद लालसा रखते हैं; बल्कि मैं तो यह मानता हूं कि तुम एक सहृदय व्यक्ति हो और इसी कारण मैं तुमसे बातें करता हूं।

मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सामने अक्सर एक प्रश्न आया करता है— "हमें आगे चलकर क्या बनना है ?" वास्तव में प्रत्येक मनुष्य अपनी युवावस्था में यही समझता है कि उसने बहुत वर्षों तक समाज की सहायता के आधार पर जिस किसी विद्या या कला का अध्ययन किया है, उसका उद्देश्य यह नहीं है कि अपने ज्ञान को दूसरों को लूटने तथा अपना स्वार्थ

साधन करने का जरिया बनाया जाय। ऐसा व्यक्ति तो अवश्य ही महाभ्रष्ट है और दुर्गुणों से पूर्ण है,जिसके मन में यह कल्पना नहीं उठती कि समय आने पर मैं अपनी बुद्धिमत्ता, अपनी योग्यता और अपने ज्ञान को उन लोगों के अधिकार दिलाने में लगाऊंगा जो आज दुर्दशा और अज्ञान में फंसे हुए हैं।

मैं माने लेता हूं कि तुम उन्हींमें से एक हो, जिनको इस प्रकार के सपने आया करते हैं। क्या वास्तव में ऐसा नहीं है ? अच्छा, तो अब हमको देखना चाहिए कि अपने स्वप्न को सत्य बनाने के लिए तुमको क्या करना है।

मैं यह नहीं जानता कि तुम कैसे घर में पैदा हुए हो। संभव है, तुम किसी संपत्तिशाली घर के हो और तुमने विज्ञान के अध्ययन का विचार किया हो; तुम डाक्टर बनना चाहते हो, अथवा वैरिस्टर, लेखक या वैज्ञानिक; तुम्हारे सामने एक विशाल कार्य-क्षेत्र मौजूद है और तुम विस्तीर्ण ज्ञान और सुशिक्षित बुद्धि को लेकर कार्यक्षेत्र में प्रवेश कर रहे हो अथवा इसके विपरीत तुम एक मेहनती कारीगर हो और तुम्हारी विज्ञान-संबंधी शिक्षा स्कूल की साधारण पढ़ाई तक ही परिमित है; पर साथ ही तुमको इस बात का स्वयं अनुभव प्राप्त करने का मौका मिला है कि वर्तमान समय में श्रमजीवियों, मजदूरों को कैसी कठिन मेहनत करके गुजारा करना पड़ता है।

विषय-सूची

प्रस्तावना	५
१. डाक्टर	७
२. वैज्ञानिक	११
३. वकील	१७
४. इंजीनियर	२२
५. शिक्षक	२५
६. कला-विशारद	२८
७. क्या करना चाहिए ?	३०
८. श्रमजीवी-आन्दोलन	३२
९. महत्वाकांक्षी नेता	३५
१०. नया मार्ग	३७
११. गरीब श्रेणीवाले	४२
१२. स्त्रियां	४८

नवयुवकों से दो बातें

: १ :

डाक्टर

अभी मैं पहली कल्पना पर विचार करता हूं, इसके बाद दूसरी पर करूंगा। इसलिए मैं यह माने लेता हूं कि तुमको अच्छी वैज्ञानिक शिक्षा मिली है। मान लो कि तुम डाक्टर बनना चाहते हो।

कल फटे-पुराने कपड़े पहने एक आदमी किसी रोगी स्त्री को देखने के लिए तुम्हें बुला ले जाता है। तुमको ऐसे तंग गली-कूचों में से ले जाता है जिनमें दो आदमियों का साथ-साथ चल सकना भी कठिन है। तुमको एक बदबूदार जगह में टिमटिमाते दीपक की रोशनी में ऊपर चढ़ना पड़ता है। तुम दो, तीन, चार या पांच गंदे जीनों को चढ़कर एक अंधेरी सीलवाली कोठरी में पहुंचते हो और वहां रोगी स्त्री को टूटी-सी चारपाई पर मैले चीथड़ों से ढकी हुई पाते हो। पीले चेहरोंवाले मैले-कुचैले बच्चे पतले कपड़ों के भीतर ठंड से कांपते हुए आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं। स्त्री का पति उमर भर किसी कारखाने में बारह-तेरह घंटे रोज काम करता रहा। अब वह तीन महीने से बेकार बैठा है। नौकरी छूट जाना उसके लिए कोई नई बात नहीं है। प्रायः हर साल या समय-समय

पर ऐसी घटना हुआ ही करती है। पर पहले जब वह बेकार रहता था तो उसकी स्त्री कुछ मेहनत-मजूरी कर लेती थी—शायद वह तुम्हारे ही घर चौका-बर्तन करती रही हो—और पांच-सात रुपया महीना कमा लेती थी, पर अब वह भी दो महीने से बीमार है और सारा परिवार दुर्दशा के भीषण पंजे में फंसा हुआ है।

डाक्टरसाहब, आपने यह तो आने के साथ ही समझ लिया होगा कि इस स्त्री की सारी बीमारी सिर्फ शारीरिक दुर्बलता है जिसका कारण है पौष्टिक भोजन का अभाव और स्वच्छ हवा की कमी। आप इसके लिए क्या नुसखा तजवीजेंगे ? प्रतिदिन एक सेर दूध ? शहर के बाहर स्वास्थ्यकर स्थान में घूमना-फिरना ? अच्छे हवादार कमरे में सोना ? कैसी विडम्बना है ! अगर उसके पास इतनी ही हैसियत होती तो ये उपाय बिना आपकी सलाह के बहुत पहले कर लिये गए होते।

अगर तुममें कुछ सहृदयता का भाव है, अगर तुम खुलकर बातचीत करते हो और अगर तुम्हारे चेहरे से ईमानदारो टपकती है तो उन लोगों से तुमको बहुत-सी बातें मालूम हो सकती हैं। वे तुमको बतलायेंगे कि बगल की कोठरी में जो औरत बुरी तरह से खांस रही है कि जिसे सुनकर तुम्हारा कलेजा फटा जाता है वह कपड़े साफ करनेवाली एक गरीब स्त्री है। नीचे की मंजिल में रहनेवाले सब बच्चे बुखार से पीड़ित हैं। सबसे नीचे की मंजिल में रहनेवाली धोबिन इस जाड़े के अंततक जिंदा नहीं बचेगी। और बगल के मकान में रहनेवाले

लोगों की दशा इससे भी बुरी है।

इनसब बीमार लोगों से तुम क्या कहोगे ? क्या उनके लिए पौष्टिक भोजन, आबोहवा की तबदीली, हलका श्रम आदि तजवीज करोगे ? तुम चाहोगे अवश्य कि तुम ऐसा कर सको; पर तुम कहने का साहस नहीं कर सकते और तुम दुखी हृदय से दैव को कोसते हुए वापस आते हो।

दूसरे दिन, जब अभी तुम उस नरक-कुंड में रहनेवालों के भाग्य पर विचार ही कर रहे हो, तुम्हारा साथी तुमको बतलाता है कि कल एक दरबान उसको बुलाने आया था और साथ में गाड़ी भी लाया था। वह उसे सुन्दर महल में रहनेवाली एक श्रीमती के देखने को ले गया। उस रमणी को रात में नींद न आने की बीमारी है। उसने अपना सारा जीवन बनावसिंगार, दावतों, तमाशों और अपने बेवकूफ पति के साथ दांता-किलकिल करने में बिताया है। तुम्हारे मित्र ने उसके लिए तजवीज किया—यथा संभव कृत्रिम आदतों का त्याग करना, सादा भोजन, स्वच्छ हवा में टहलना, शांत स्वभाव रखना और कोई शारीरिक काम न करने की कमी को किसी अंश में पूरा करने के लिए अपने कमरे के भीतर हलकी कसरत कर लेना।

एक इसलिए मर रही है कि उसे तमाम उमर न कभी काफी खाना मिला न काफी आराम; दूसरी इसलिए तकलीफ पा रही है कि उसे अपने जीवन में आज तक यही मालूम नहीं हुआ कि मेहनत करना किसे कहते हैं।

अगर तुम उन निर्बल चरित्र के व्यक्तियों में से हो

जो हर तरह की परिस्थिति से दब जाते हैं, जो अत्यंत बीभत्स दृश्य को देखकर भी एक शोक-सूचक निःश्वास तथा शरबत के एक गिलास से चित्त को शांत कर लेते हैं, तो धीरे-धीरे तुमको इन परस्पर-विरोधी दृश्यों को देखने की आदत हो जायगी। तुम्हारे भीतर पशुभाव उदय होने लगेगा। तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य सुख-लोलुप लोगों के बीच में रहना बन जायगा, जिससे तुमको कभी दुर्दशाग्रस्त लोगों के बीच में जाने का काम ही न पड़े। पर अगर तुम 'आदमी' हो, अगर तुम अपने मनोभावों को कार्य में परिणत करने की इच्छाशक्ति रखते हो, अगर तुम्हारे पशुभाव ने तुम्हारे विवेक को नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर दिया है, तो एक दिन तुम अपने मन में यह कहते हुए घर लौटोगे—"नहीं, यह अन्याय है, यह अधिक समय तक कायम नहीं रहना चाहिए। केवल रोगों का इलाज करने से काम नहीं चलेगा, उनके पैदा होने के कारणों को ही रोकना चाहिए।" अगर मनुष्यों को भोजन-वस्त्र की कुछ सुविधा हो जाय और वे कुछ शिक्षित हो जायं तो हमारे रोगियों की संख्या आधी ही रह जाय और बीमारियां भी लुप्त हो जायं। चिकित्सा-शास्त्र चूल्हे में जाय! स्वच्छ हवा, पौष्टिक भोजन और साधारण परिश्रम—यही सबसे पहली बातें हैं। इनके बिना डाक्टरी की सब बातें चालबाजी और धोखेबाजी के सिवा कुछ नहीं हैं।

बस, जिस दिन ये बातें तुम्हारी समझ में आ जायंगी, उसी दिन तुम साम्यवाद को समझ जाओगे।

फिर तुम इसको पूरी तरह से जानना चाहोगे। और अगर तुम परोपकार के सिद्धान्त के महत्व को कुछ भी समझते हो, अगर तुम एक स्वाभाविक दार्शनिक की भांति प्रमाणों के साथ सामाजिक प्रश्नों पर विचार करोगे तो अंत में एक दिन तुमको साम्यवादियों के दल में मिल जाना पड़ेगा और तुम सामाजिक क्रांति के लिए हमारी तरह उद्योग करने लगोगे।

: २ :

वैज्ञानिक

पर शायद तुम यही कहो कि मेरा ऐसे व्यावहारिक धंधे से कोई संबंध नहीं है। मैं खगोल विद्या, प्राणि-शास्त्र या रसायनशास्त्र में लगकर विज्ञान की उन्नति करूंगा। ऐसे काम का फल सदा अच्छा निकलेगा, भले ही वह हमको न मिलकर आनेवाली संतान को मिले।

सबसे पहले हमें यह जानने का उद्योग करना चाहिए कि विज्ञान की उन्नति करने से तुम्हारा उद्देश्य क्या है? क्या यह उद्देश्य केवल आनन्द—उत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करना है, जो प्रकृति के निरीक्षण और अपनी मानसिक शक्तियों को किसी काम में लगाकर विकसित करने से मिलता है। उस दशा में तुमसे पूछूंगा कि जो दार्शनिक अपना जीवन आनन्द के साथ व्यतीत करने के लिए विज्ञान का अध्ययन करता है उसमें और एक शराबी में, जो शराब के नशे से थोड़ी देर के लिए दिल की खुशी हासिल करता है, क्या फ़र्क

है ? इसमें सन्देह नहीं कि दार्शनिक ने अपने आनन्द का विषय अधिक बुद्धिमानी से चुना है, क्योंकि उससे शराब की अपेक्षा बहुत गहरा और बहुत स्थायी आनन्द मिलता है, पर इससे ज्यादा कुछ नहीं। दोनों ही व्यक्ति स्वार्थ पर निगाह रखते हैं और दोनों का उद्देश्य एक ही है, यानी व्यक्तिगत सुख प्राप्त करना।

पर नहीं, तुम कहोगे कि मैं अपने स्वार्थ के लिए यह काम नहीं करता, विज्ञान की उन्नति के लिए, मनुष्य-जाति के हित के लिए करता हूं। मेरे अन्वेषण का यही लक्ष्य रहेगा।

यह भी एक मजेदार भ्रम है! हममें जिस किसीने जब पहले-पहल विज्ञान का कार्य आरम्भ किया था तो अवश्य ही एक बार इसका सहारा लिया था। पहले हम भो ऐसा ही करते थे।

पर यदि दरअसल तुम मनुष्य-जाति का विचार करते हो और तुम्हारा उद्देश्य मनुष्य-समाज का हित-साधन करना है, तो तुम्हारे सामने एक विकट प्रश्न उपस्थित होता है। तुम्हारे भीतर समालोचना करने का भाव कितना ही कम क्यों न हो तो भी तुम तुरंत जान सकते हो कि आजकल हमारे समाज में विज्ञान सुखोपभोग का एक साधन मात्र बन गया है, जिससे थोड़े-से लोग अपने जीवन को अधिक सुखी बनाते हैं, पर मनुष्य-समाज का अधिकांश भाग उसतक पहुंच भी नहीं पाता।

सौ साल से ज्यादा समय व्यतीत हो गया जब

विज्ञान ने विश्व ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का निश्चयात्मक रूप से निर्णय कर दिया था; पर कितने लोगों ने उन सिद्धांतों का अध्ययन किया है, या उस सम्बन्ध में कुछ वैज्ञानिक और आलोचनात्मक ज्ञान रखते हैं ? ऐसे लोगों की संख्या शायद कुछ हजार होगी ; पर उन करोड़ों मनुष्यों के सामने, जो अभी तक दुराग्रह और अंधविश्वासों में फंसे हैं और इस कारण धार्मिक ठगों के हाथों में कठपुतली बन जाते हैं, ऐसे लोगों की संख्या दाल में नमक के बराबर भी नहीं है ।

अगर हम इससे कुछ और आगे बढ़कर देखें तो हमको विचार करना चाहिए कि विज्ञान ने शारीरिक और चरित्र-संबंधी स्वास्थ्य के ज्ञान को फैलाने के लिए क्या किया है ? विज्ञान हमको बतलाता है कि अपने शरीर का स्वास्थ्य कायम रखने के लिए हमको किस तरह रहना चाहिए और किस तरह देश में बसनेवाली असंख्य जनता अच्छी दशा में रक्खी जा सकती है। पर क्या इन दोनों बातों के लिए किया गया मस्तिष्क-श्रम केवल किताबों के भीतर बन्द रहकर बेकार नहीं पड़ा है ? सब लोग जानते हैं कि यह परिश्रम बेकार पड़ा है। इसका कारण क्या है ? यही कि विज्ञान का अस्तित्व आजकल केवल थोड़े-से विशेष-अधिकार प्राप्त लोगों के वास्ते है। सामाजिक असमानता के कारण आजकल मनुष्य-जाति दो भागों में बंटी हुई है—एक मजदूरी करनेवाले गुलाम और दूसरे धन-संपत्ति के स्वामी पूंजीपति। इस भेद के कारण विवेकयुक्त जीवन

व्यतीत करने की सब शिक्षाएं सौ में से नव्वे मनुष्यों के लिए एक दिल दुखानेवाले मजाक के सिवा और कुछ अर्थ नहीं रखतीं।

मैं तुमको और भी बहुत-से उदाहरण बतला सकता हूं, पर बात को ज्यादा बढ़ाना ठीक नहीं। अगर तुम अपनी तंग कोठरी से, जिनकी खिड़कियों पर धूल जमी हुई है और जिसमें रक्खी हुई पुस्तकों की अलमारियों पर सूर्य का प्रकाश भी नहीं पड़ता, बाहर निकलकर चारों तरफ आंख खोलकर देखोगे तो तुमको कदम-कदम पर नये प्रमाण मिलेंगे जिनसे इस मत का समर्थन होगा।

इस समय हमको विज्ञान-सम्बन्धी ज्ञान और आविष्कारों की वृद्धि करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। सबसे जरूरी बात यह है कि जो ज्ञान अभीतक प्राप्त हो चुका है, वह प्रतिदिन के जीवन में काम में लाया जाय और सर्वसाधारण तक पहुंचाया जाय। हमको ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिए कि मनुष्यमात्र विज्ञान के सत्य सिद्धांतों को जान सके और काम में ला सके। ऐसा होने से विज्ञान एक शौक की चीज न रहेगा, बल्कि मनुष्य के जीवन का आधार बन जायगा। यही न्यायानुकूल बात है—इन्साफ का यही तकाजा है।

इसके सिवा विज्ञान के हित की दृष्टि से भी यही आवश्यक है। विज्ञान की सच्ची उन्नति तभी होती है जबकि जनसमूह उसके सिद्धान्तों का स्वागत करने को तैयार हो। यंत्र द्वारा उष्णता की उत्पत्ति का सिद्धान्त

गत शताब्दी में स्थिर हो चुका था, पर अस्सी वर्ष तक किताबों में ही बंद पड़ा रहा और उसका उपयोग तभी हो सका जब जनता में भौतिकशास्त्र का काफी ज्ञान फैल गया। डार्विन ने प्राणियों के विकास का जो सिद्धांत मालूम किया वह तीन पुश्त के बाद विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया। और वह भी तब जब उन-पर सार्वजनिक मत का दबाव पड़ा। कवि और चित्र-कार की तरह दार्शनिक के अस्तित्व का आधार भी वह समाज है जिसमें वह रहता है और अपने उपदेशों का प्रचार करता है।

पर जब इस प्रकार के विचार तुम्हारे भीतर भर जायंगे तो तुम समझ जाओगे कि सबसे अधिक महत्व की बात वर्तमान स्थिति में जड़मूल से परिवर्तन करना है। उस स्थिति में जिसके कारण थोड़े-से दार्शनिकों के भीतर वैज्ञानिक सिद्धान्त ठूस-ठूसकर भर दिये जाते हैं और शेष जनसमूह उसी दशा में पड़ा रहता है जिसमें वह हजार-पांचसौ वर्ष पहले था अर्थात् वह गुलामी या निर्जीव मशीनों की भांति बना रहता है और सत्य सिद्धान्तों के समझने में असमर्थ रहता है। जिस दिन तुम इस विस्तृत, गंभीर, उदार और पूर्ण वैज्ञानिक सच्चाई को पूरी तरह से समझ जाओगे, उसी दिन से तुमको खाली विज्ञान में कुछ मज़ा न आवेगा। तुम उन उपायों को जानने के लिए उद्योग करने लगोगे, जिनसे ऐसा परिवर्तन हो सके। और अगर तुम इस जांच को उसी निष्पक्षता के साथ करोगे जिसकी महा-

यता से अबतक वैज्ञानिक अन्वेषणों को कहते रहे हो तो तुम अवश्य ही साम्यवाद के पक्ष को स्वीकार कर लोगे—दिखावे और भ्रमपूर्ण तर्कों को त्यागकर साम्य-वादियों के साथी बन जाओगे । तब उन थोड़े-से लोगों के लिए, जिनके पास अब भी ऐसे साधनों का बहुत बड़ा हिस्सा मौजूद है, आनन्द के साधन जुटाने का उद्योग करना व्यर्थ समझकर, तुम अपने ज्ञान और शक्ति को अत्याचार-पीड़ितों की सेवा में लगाओगे ।

यह विश्वास रक्खो कि जब कर्त्तव्य-पालन का भाव पैदा हो जायगा और तुम्हारे विचारों और कार्यों में सच्ची एकता कायम हो जायगी तो तुमको अपने भीतर ऐसी शक्तियां मालूम होने लगेंगी जिनके अस्तित्व का तुमको पहले स्वप्न में भी पता न था। अन्त में एक दिन ऐसा आयेगा——और शीघ्र ही आयेगा, चाहे उस समय तक हमारे वर्तमान शिक्षक भले ही जीवित न रहें—जबकि वह परिवर्तन, जिसके लिए तुम उद्योग कर रहे हो, उत्पन्न हो जायगा । उस समय जनसमूह के सम्मिलित विज्ञान-सम्बन्धी कार्य से नई शक्ति प्राप्त करके, श्रमजीवियों (मजदूरों) के बड़े-बड़े सेनादलों की, जो अपने उद्योग का फल संसार की ज्ञान-वृद्धि में लगा-ओगे, शक्तिशाली सहायता से विज्ञान और कला-कौशल इतनी शीघ्रता से उन्नति करने लगेगा जिसके मुकाबले में उसकी वर्तमान समय की मंद-गति बच्चों के खेल के समान जान पड़ेगी । तब तुम्हें विज्ञान का मज़ा मालूम होगा; क्योंकि उस समय आनन्द का उपभोग तुम अकेले

ही न करोगे, बल्कि तुम्हारे साथ साधारण जनता भी होगी।

: ३ :

वकील

मान लो, तुमने कानून की परीक्षा पास की है और वकालत का पेशा आरंभ करनेवाले हो। संभवतः तुमको अपने भविष्य के कार्यक्रम के संबंध में भ्रमपूर्ण धारणाएं होंगी। मैं मानता हूं कि तुम एक श्रेष्ठ विचार-वाले व्यक्ति हो और परोपकार का महत्व भी अच्छी तरह समझते हो। शायद तुम सोचते होगे कि "मैं जीवन-भर सब प्रकार के अन्याय का लगातार और बलपूर्वक विरोध करता रहूंगा। अपनी समस्त योग्यता कानून की विजय के लिए खर्च करूंगा। जनता के सामने सर्वोच्च न्याय का आदर्श उपस्थित करूंगा। क्या कोई पेशा इससे श्रेष्ठ हो सकता है?" इस प्रकार तुम अपने और अपने पसंद किये हुए पेशे के भीतर विश्वास रखते हुए जीवन-क्षेत्र में प्रवेश करते हो।

बहुत अच्छा, हम अदालती रिपोर्टों के पन्ने उलट-कर इस बात की जांच करते हैं कि वास्तविक स्थिति क्या है।

अदालत के सामने एक मालदार जमींदार आता है। वह एक झोंपड़ी में रहनेवाले किसान को लगान न दे सकने के कारण जमीन से बेदखल कराना चाहता है। कानून की दृष्टि से मुकदमे में किसी प्रकार की

उलझन नहीं है; क्योंकि जब गरीब किसान लगान नहीं चुका सकता तो उसे जमीन पर से कब्जा छोड़ देना चाहिए। पर अगर हम इस मामले में वास्तविक घटनाओं की जांच करते हैं तो हमें कुछ और ही पता चलता है। जमींदार अपनी आमदनी को ऐश-आराम के कामों में खुले हाथों बरबाद करता रहा है और किसान को उमर भर हर रोज सख्त काम करना पड़ा है। जमींदार ने अपनी जमींदारी की उन्नति के लिए किसी तरह की कोशिश नहीं की तो भी पचास वर्ष के भीतर उसकी जमीन का दाम पहले से तिगुना हो गया है। जमीन का दाम बढ़ने का कारण है एक नई रेलवे लाइन का बनना, या किसी बड़ी सड़क का पास होकर निकल जाना, या दलदल को सुखाकर सूखी जमीन बना लेना, या ऊसर जमीन को खेती के लायक बनाना, इत्यादि। पर जिस किसान ने अधिकांश में यह सब उन्नति की, उसे इससे कुछ फायदा नहीं हुआ। वह बरबाद हो गया, साहूकारों के फंदे में फंसकर गले तक कर्ज में डूब गया और अब उसमें जमीन का लगान अदा करने की भी सामर्थ्य नहीं रही। कानून सदा जायदादवाले के पक्ष में रहता है। उसका अर्थ स्पष्ट है और उसके अनुसार जमींदार न्याय पर है; पर तुम्हारा न्याय का भाव अभी कानूनी किस्सों से ढक नहीं गया है। तुम इस मामले में क्या करोगे? क्या तुम मान लोगे कि किसान को निकालकर बाहर सड़क पर डाल दिया जाय; क्योंकि कानून का यही मंशा है? अथवा तुम इस बात

पर जोर दोगे कि जमींदार को जमीन की तमाम बढ़ी हुई आमदनी किसान को वापस कर देनी चाहिए; क्योंकि वह उसकी मेहनत का फल है और यही न्याय का निर्णय है ? तुम कौन-सा पक्ष स्वीकार करोगे ? कानून के अनुकूल पर न्याय के विरुद्ध, या न्याय के अनुकूल और कानून के विरुद्ध ?

अथवा, जब किसी कारखाने के मालिक के खिलाफ मजदूरों ने बिना नोटिस दिये हड़ताल कर दी हो तब तुम किसका पक्ष लोगे ? तुम कानून का पक्ष लोगे, जिसका अर्थ है मालिक का पक्ष लेना, जिसने किसी हलचल के मौके से फायदा उठाकर बेहद नफा उठाया है ? अथवा तुम कानून के खिलाफ चलकर मजदूरों का पक्ष लोगे, जिनको कभी आठ या बारह आने रोजाना से ज्यादा मजदूरी नहीं दी गई और जिनके स्त्री-बच्चे उनकी आंखों के सामने ही भूखों मर चुके है ? क्या तुम उस जालसाजी से भरे कानून-कायदे का पक्ष ग्रहण करोगे जोकि 'इकरारनामे (प्रतिज्ञा) की स्वाधीनता' का समर्थन करता है ; अथवा तुम सच्चे न्याय का समर्थन करोगे जिसके अनुसार ऐसा इकरारनामा, जो एक खूब भरे पेटवाले और एक ऐसे आदमी के बीच में हुआ हो जिसे केवल प्राण-रक्षा के लिए कुछ भी मज़दूरी करने की आवश्यकता है अथवा जो ताकतवर और कमजोर के बीच में हुआ हो, जिसे किसी भी दशा में इकरारनामा नहीं कहा जा सकता ?

एक और मुकदमा देखो। किसी बड़े शहर में एक

आदमी बाजार में फिर रहा है। वह किसी दुकान से दो सेर आटा चुराकर भागता है। पकड़े जाने पर जब उससे पूछा गया तो मालूम हुआ कि वह एक अच्छा कारीगर है, जो बिना रोजगार के फिर रहा है, और उसे तथा उसके बाल-बच्चों को चार दिन से एक टुकड़ा भी खाने को नहीं मिला! दुकानदार से अनुरोध किया गया कि वह अपराधी पर दया करके उसे छोड़ दे; पर वह इंसाफ की दुहाई देता है। वह मुकदमा दायर करता है और उस आदमी को छः महीने की जेल हो जाती है; क्योंकि कानून लिखनेवाले अंधे, ऐसा ही कह गये हैं। क्या उस समय तुम्हारी अंतरात्मा में समाज के प्रति विद्रोह का भाव पैदा नहीं होता, जब तुम हर-रोज इस प्रकार के फैसले होते देखते हो?

अथवा तुम उस आदमी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करना उचित बतलाओगे, जिसका पालन-पोषण दूषित रीति से हुआ है और जिसे बचपन से ही खोटे काम करने की आदत लगाई गई है, जिसने अपनी तमाम उमर में सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं सुना और अंत में जिसने कुल जमा एक रुपये के लालच से अपने पड़ौसी की हत्या कर डाली? क्या तुम कहोगे कि उसको फांसी दे दी जाय—अथवा, इससे भी बढ़कर बीस वर्ष के लिए कैद की सजा दी जाय? क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि वह अपराधी होने के बजाय एक पागल आदमी है, और हर हालत में उसके कसूर के लिए हमारा सारा समाज दोषी है।

क्या तुम यह दावा करोगे कि ये कपड़े बुननेवाले मज़दूर, जिन्होंने घोर निराशा के वश होकर मिल में आग लगा दी, कैदखाने में डाल दिये जायं ? अथवा यह शख्स, जिसने एक छत्रधारी हत्यारे पर गोली चला दी, जन्म-कैद की सजा पावे ? अथवा ये बागी, जिन्होंने मोर्चे के ऊपर स्वाधीनता का झंडा खड़ा किया, गोली से मार दिये जायं ? नहीं हजार बार नहीं। अगर तुम उन बातों को दुहराने के बजाय, जो तुमको स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई गई हैं, अपनी अक्ल से काम लोगे, अगर तुम कानून का विश्लेषण व जांच-पड़ताल करोगे और उन दुरूह भ्रमपूर्ण कथाओं को अलग फेंक दोगे जो कानून की असलियत को ढकने के लिए गढ़ी गई हैं तो तुमको मालूम हो जायगा कि कानून की असलियत यही है कि बलवान के अधिकार का समर्थन किया जाय। और कानून का मूल-स्वरूप है उन सब अत्याचारों को पवित्र बतलाना जिनका वर्णन मनुष्य-जाति के प्राचीन और रक्त-प्लावित इतिहास में पाया जाता है। तुम इस रहस्य को समझ जाओगे तो तुमको कानून के प्रति भारी घृणा हो जायगी। तुम समझ जाओगे कि पुस्तकों में लिखे कानून का सेवक बने रहने से तुमको हर रोज अपनी अंतरात्मा के कानून का विरोध करना पड़ता है। पर इस प्रकार की दुविधा-जनक परिस्थिति सदा कायम नहीं रह सकती। अंत में या तो तुम अपनी अंतरात्मा को चुप करके पूरे धूर्त्त और मक्कार बन जाओगे; अथवा तुम परंपरा की लकीर पर चलना छोड़ दोगे और सब प्रकार के—आर्थिक और राज-

नैतिक–अन्यायों का पूरी तरह से नाश करने के लिए हम लोगों के साथ मिलकर काम करने लगोगे। पर तब तुम साम्यवादी कहे जाओगे और तुम्हारी गणना क्रांतिकारियों में होगी।

: ४ :

इंजीनियर

तुम एक नवयुवक इंजीनियर हो और वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग व्यापार और कारीगरी में करके मजदूरों की दशा सुधारने का स्वप्न देख रहे हो। अभी तुम्हें बहुत धोखे खाने पड़ेंगे, पर वह दिन दूर नहीं जब तुम्हारा यह भ्रम दूर हो जायगा। तुम अपनी तरुण बुद्धि और शक्ति को लगाकर एक नई रेलवे की योजना तैयार करते हो, जो ऊंचे स्थानों का चक्कर लगाकर, भारी पहाड़ों के हृदयों को छेदकर, दो अलग-अलग देशों को जिनको प्रकृति ने भिन्न बना रक्खा था, मिला देती है, पर जब काम शुरू होता है तो तुम देखोगे कि मज़दूरों के दल-के-दल अंधेरी सुरंगों के भीतर भूख-प्यास और बीमारी से मर रहे हैं, दूसरे बहुत-से मज़दूर थोड़े-से पैसे और क्षय की बीमारी के बीज लेकर घर लौट रहे हैं। तुच्छ लालच के कारण रेलवे लाइन की एक-एक गज जमीन मनुष्यों की बलि देकर बनाई जा रही है। अंत में जब लाइन तैयार हो जाती है तो तुम देखते हो कि तुम्हारी यह रेलवे लाइन दूसरे देश पर हमला करने के लिए तोपें और सेनाएं भेजने के काम में लाई

जा रही है।

दूसरा उदाहरण देखो। तुम अपनी तरुण अवस्था को एक ऐसा आविष्कार करने में लगाते हो जिससे माल सहज में बनाया जा सके। बहुत कोशिशों के बाद बहुत रातों की नींद हराम कर अंत में तुम अपने आविष्कार में सफल होते हो। तुम उसको व्यवहार में लाते हो और उसका नतीजा तुम्हारे अनुमान से कहीं बढ़कर निकलता है। दस-बीस हजार प्राणी नौकरी से अलग कर दिये जाते हैं, केवल थोड़े-से बच्चों को नौकर रक्खा जाता है और उनकी हालत भी निर्जीव मशीनों की-सी बना दी जाती है। दो-चार या दस-बीस मालदार कारखानेवाले करोड़ों रुपया पैदा कर लेते हैं और राजसी ठाठ से भोग-विलास में रहने लगते हैं। क्या यही तुम्हारा लक्ष्य था ?

इस प्रकार जब तुम आजकल की अन्य प्रकार की यंत्रविद्या-संबंधी उन्नति पर विचार करोगे, तो तुमको मालूम होगा कि सीने की मशीन के आविष्कार से सिलाई का काम करनेवाली गरीब औरतों का ज़रा भी लाभ नहीं हुआ। नई तरह की बरमा मशीन बन जाने पर भी खान में काम करनेवाले मजदूरों को गठिया की बीमारी के कारण मरना पड़ता है। अगर तुम सामाजिक प्रश्नों पर उसी स्वाधीन भाव से विचार करोगे जिससे यंत्र-विद्या-संबंधी जांच-पड़ताल करते हो तो तुम अवश्य इस निर्णय पर पहुंचोगे कि जबतक दुनियां में निजी जायदाद और मजदूरी की प्रथा कायम है तब तक हरेक नया आविष्कार मजदूरों का अधिक भला करने की अपेक्षा उनकी

गुलामी को और ज्यादा मजबूत करता है, उनके काम को और भी नीचा बनाता है, व्यापार-संकट के अवसर को बार-बार लाता है और उसके द्वारा केवल वही आदमी फायदा उठा सकता है जिसको अभी सब तरह का बड़े-से-बड़ा सुख प्राप्त है।

जब तुम एक बार निर्णय पर पहुंच गये तब तुम क्या करोगे? या तो तुम मिथ्या तर्क से अपनी अंतरात्मा को चुप कराने लगोगे और अंत में एक दिन अपनी तरुणावस्था के सच्चे विचारों को सदा के लिए विदा करके केवल अपने लिए ऐश-आराम के साधन प्राप्त करने की कोशिश करने लगोगे। तब गरीबों को लूटकर खानेवालों के दल में मिल जाओगे। पर, यदि तुम्हारे भीतर सहृदयता का भाव है तो तुम अपने मन में कहोगे—"नहीं, यह समय आविष्कार करने का नहीं है। पहले हमको उत्पत्ति तथा सम्पत्ति के वर्तमान अधिकार को बदलने का उद्योग करना चाहिए। जब निजी जायदाद के नियमों का अंत हो जायगा तब यंत्रविद्या की उन्नति होने से मनुष्यमात्र फायदा उठा सकेंगे और ये असंख्य मजदूर, जो आजकल केवल मशीनों के पुरजों के समान बने हुए हैं, तब विचारशील प्राणी बन जायंगे और अध्ययन द्वारा विकसित तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा तीव्र बनी हुई अपनी बुद्धि का उपयोग कला-कौशल की उन्नति में करेंगे। इससे पचास वर्ष के भीतर कला-कौशल की ऐसी आश्चर्यजनक उन्नति हो जायगी कि जिसकी इस समय हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

: ५ :

शिक्षक

अब रहे स्कूल-मास्टर, सो उनसे मैं क्या कहूं। उस स्कूलमास्टर से नहीं जो अपने पेशे को बेगार की तरह समझता है; बल्कि उससे जो आमोद-प्रिय छोटे-छोटे बच्चों के दल के बीच में बैठकर उनकी विनोद-पूर्ण निगाहों और आनन्ददायक हँसी से प्रसन्न होता है—उस स्कूलमास्टर से, जो उन छोटे बच्चों के हृदयों में मनुष्य के उन आदर्शों का बीज बोना चाहता है जिनका अपनी युवावस्था में वह विचार किया करता था।

प्राय: मैं तुमको रंजीदा देखता हूं, और मैं जानता हूं कि तुम्हारी चिंता का कारण क्या है? उसी दिन तुम्हारे एक प्यारे विद्यार्थी ने, जो यद्यपि भाषा में बहुत होशियार नहीं पर जिसका हृदय बड़ा विशाल है, महाराणा प्रताप की कहानी को बड़े जोश के साथ पढ़कर सुनाया। उसकी आंखें चमक रही थीं और ऐसा मालूम होता था कि वह उसी दम तमाम अत्याचारियों का नामोनिशां मिटा देना चाहता है।

मारू बाजे बजें कहूं धौंसा घहराहीं।
उड़हिं पताका, शत्रु-हृदय लखि-लखि थहराहीं॥
हैं ये कितने नीच, कहा इनको बल भारी।
सिंह जगे कहुं स्वान ठहरिहैं समर मँझारी॥

पर जब वही विद्यार्थी घर लौटकर गया तो उस के माता-पिता ने, उसके चाचा ने, कस्बे के बड़े महंत

या पुलिसवाले थानेदार को सलाम न करने के लिए उसे बहुत डांटा-फटकारा। उन्होंने उसको दुनियादारी, अधिकारियों की इज्जत, अपने से ऊंचे दर्जे के लोगों के प्रति विनय के संबंध में बड़ा लंबा लेक्चर सुनाया, जिससे अंत में उसने महाराणा प्रताप की जीवनी को उठाकर अलग रख दिया और 'सांसारिक उन्नति के उपाय' नामक पुस्तक को पढ़ना शुरू किया।

अभी कल ही तुमसे किसीने कहा है कि तुम्हारे सब होनहार विद्यार्थी उलटे रास्ते पर चल रहे हैं। उनमें से एक सिवा अफसर बनने का स्वप्न देखने के और कुछ नहीं करता; दूसरा किसी बड़े आदमी का कृपापात्र बनकर गरीबों को लूटता है। तुमने इन लोगों से न जाने कैसी आशाएं की थीं। अब अपने आदर्शों और दुनिया की असलियत को देखकर तुम चिंता में पड़े हुए हो।

तुम कुछ समय तक चिंता करते रहते हो। पर मैं समझता हूं कि साल-दो-साल बाद ऐसा समय आवेगा, जब बार-बार निराश होकर अंत में तुम अपने आदर्श ग्रंथों को आलमारी में बंद कर दोगे और कहने लगोगे कि 'महाराणा प्रताप आदमी तो बड़ा स्वाभिमानी और देश-भक्त था, पर साथ ही कुछ सनकी भी था।' तुम विचार करने लगोगे कि कविता विश्राम के समय में बहुत अच्छी चीज है, खासकर उस हालत में जब एक आदमी दिन-भर लड़कों से त्रैराशिक-पंचराशिक का हिसाब समझाते-समझाते थक गया हो, पर

कवि लोग कल्पना के राज्य में विचरण करते हैं और उनके विचारों से जीवन-निर्वाह करने में कुछ मदद नहीं मिल सकती और न इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स के दौरे के समय उनसे कुछ लाभ हो सकता है।

अथवा, इसके विरुद्ध यह होगा कि तुम्हारे युवावस्था के स्वप्न बड़ी उमर हो जाने पर दृढ़ विश्वास के रूप में परिणत हो जायंगे। तुम चाहोगे कि मनुष्यमात्र को, चाहे वह स्कूल में पढ़ता हो या नहीं, विस्तृत और मनुष्योचित शिक्षा दी जाय; पर यह देखकर कि ऐसा हो सकना वर्तमान स्थिति में असंभव है, तुम वर्तमान सामाजिक संगठन की जड़ पर ही कुठाराघात करने लगोगे। तब तुम शिक्षा-विभाग द्वारा नौकरी से अलग कर दिये जाओगे। तुमको स्कूल छोड़कर हम लोगों के बीच में आना पड़ेगा और हमारे ही साथ काम करना पड़ेगा। तुम दूसरे लोगों को, जिनकी उमर तुमसे ज्यादा होने पर भी जिनकी योग्यता तुमसे कम है, समझाओगे कि ज्ञान कैसी मनोहर वस्तु है, मनुष्य-समाज को कैसा होना चाहिए अथवा वह कैसा बन सकता है। तुम साम्यवादियों के साथ मिलकर वर्तमान सामाजिक प्रथा को जड़-मूल से बदलने के लिए उद्योग करने लगोगे और ऐसा प्रयत्न करोगे जिससे संसार के लिए सच्ची एकता, सच्चा भ्रातृभाव और अनंत समय तक कायम रहनेवाली स्वाधीनता प्राप्त की जा सके।

: ६ :

कला-विशारद

अंत में मैं तरुण कला-विशारद, मूर्तिकार, चित्रकार, कवि, संगीतज्ञ आदि से पूछता हूं कि क्या तुम नहीं देखते कि जो प्रज्वलित अग्नि, जो स्फूर्ति तुम्हारे पूर्वजों के दिलों में उत्तेजना फूंका करती थी वह आजकल के लोगों में नहीं पाई जाती और कला के क्षेत्र में साधारण और विशेषता-हीन कृतियों की ही बहुतायत देखने में आती है ?

पर इसके सिवा और हो भी क्या सकता है ? प्राचीन काल की घटनाओं को फिर से अवलोकन करने से और नवीन प्रकृति के दृश्यों का निरीक्षण करने से जो मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है, उसीसे प्रेरित होकर मध्यकालीन युग के बड़े-बड़े प्रसिद्ध चित्रों और मूर्तियों की रचना की गई थी; पर वे साधन इस समय मौजूद नहीं हैं। साथ ही किसी क्रांतिकारी आदर्श के सामने न होने से कला में जीवन भी नहीं पाया जाता। इन कारणों में हमारा कला का उद्देश्य सिर्फ नकल करना रह गया है। हम बड़ी मेहनत करके पत्तों पर पड़ी ओस की बूंदों का चित्र खींचते हैं। गाय के पैर की जैसी की-तैसी नकल तैयार करते हैं। अथवा गंदे नालों की दम घुटनेवाली गंदगी का या किसी ऊंचे दरजे की वेश्या के विलास-भवन का गद्य या पद्य में बारीकी के साथ वर्णन करते हैं।

तुम पूछोगे कि यदि ऐसा है तो क्या किया जा सकता है ? मेरा जवाब यह है कि तुम अपने भीतर जो प्रज्वलित अग्नि बतलाते हो, अगर वह धुआं फैलानेवाली धुंधली पत्ती के सिवा और कुछ नहीं है तो तुम उसी तरह काम करते होगे जैसे अबतक करते रहे हो। उस दशा में तुम्हारी कला का शीघ्र ही पतन होने लगेगा, और वह व्यापारियों की दुकानों को सजाने का या थर्ड क्लास नाटक-घरों के लिए नाटक तैयार करने का या बच्चों का जी बहलानेवाली कहानियां लिखने का साधनमात्र बन जायगी। अब भी तुममें से अधिकांश लोग उसी रास्ते पर चल रहे हैं और तेजी के साथ आगे बढ़ते जाते हैं।

पर यदि तुमको मनुष्य-जाति के प्रति सहानुभूति है, तुम्हारी हृदयतंत्री उनके दुःख-सुख के साथ बजती है, अगर एक सच्चे कवि की भांति तुम जीवन-संगीत को सुनते हो तो इस शोक-समुद्र का अवलोकन करते हुए, जिसकी ऊंची लहरें तुम्हारे चारों ओर उठ रही हैं, इन असख्य लोगों की भूख की ज्वाला से अपने सामने मरते देखकर, इन खानों में मरे हुए लोगों के शवों को देखकर, इन मोर्चों पर पड़ी हुई छिन्न-भिन्न नर-देहों के ढेरों को देखकर, इन निर्वासितों को देखकर, जो लंबी-लंबी कतारों में निर्जन देशों और काले पानी में अपने शरीरों को गलाने के लिए जा रहे हैं, इस निराशाजनक युद्ध को देखते हुए, जिसमें हारे हुओं का कष्टजनित चीत्कार और जीतनेवालों का अट्टहास स्पष्ट सुनाई

दे रहा है, बहादुरी के मुकाबले में कायरता के और प्रशंसनीय दृढ़ विश्वास के मुकाबले में तुच्छ चालबाजी के इन दृश्यों को देखते हुए तुम हर्गिज उदासीन नहीं बने रह सकते। तुम अवश्य आगे आओगे और अत्याचार-पीड़ितों का पक्ष ग्रहण करोगे, क्योंकि तुम जानते हो कि 'सत्यं शिवं सुंदर' उन्हीं लोगों के पक्ष में है जो प्रकाश, मनुष्यता और न्याय के लिए संग्राम करते हैं।

: ७ :

क्या करना चाहिए ?

अंत में तुम मुझसे कहोगे—"बस, चुप रहो ! यह कैसी आफत है ! अगर विज्ञान के सिद्धांतों का अनुशीलन करना अपना शौक पूरा करना है, अगर डाक्टर बनना लोगों को धोखा देना है, अगर कानूनी पेशे का अर्थ अन्याय फैलाना है, अगर यंत्र-संबंधी आविष्कार केवल लोगों को लूटने के साधन हैं, अगर स्कूल सच्ची व्यावहारिक शिक्षा के अभाव के कारण बन्द कर देने लायक हैं, अगर कला कोई क्रांतिकारी आदर्श न होने के कारण पतन को प्राप्त होती है तो अब तुम्हीं बतलाओ कि मैं आखिर क्या करूं ?

अभी बहुत काम करने को पड़ा है। एक चित्ताकर्षक काम, एक ऐसा काम जिसमें तुम्हारा आचरण सर्वथा तुम्हारी अंतरात्मा के अनुकूल रहेगा, एक ऐसा ध्येय जो श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ और अत्यन्त शक्तिशाली आत्मा के भीतर भी उत्साह भर सकता है ! अब मैं बतलाता

हूं कि वह काम कौन-सा है ।

तुम्हारे लिए सिर्फ दो ही रास्ते खुले हैं । या तो तुम हमशा के लिए अपनी अंतरात्मा को, अपने विवेक की पुकार को धोके में डालते रहोगे और अंत में एक दिन कह दोगे—"जबतक मैं सब तरह के आनन्द भोग मज़े के साथ पा रहा हूं और जबतक जनता ऐसी मूर्ख है कि वह मेरे रास्ते में बाधा नहीं डालती, तबतक मनुष्य-जाति को चूल्हे में जाने दो ।" यदि ऐसा न हुआ तो तुम साम्यवादियों में मिल जाओगे । अबतक हमने जो विश्लेषण किया है उससे हम इसी निर्णय पर पहुंचते हैं । हरेक बुद्धिमान व्यक्ति, जो अपने चारों ओर की दशा का निष्पक्ष भाव से निरीक्षण करेगा और जो पुरानी शिक्षा से पैदा होनेवाली भ्रमपूर्ण युक्तियों और मित्रों की स्वार्थमयी सम्मतियों पर ध्यान न देगा, अवश्य ही इसी युक्तिसंगत नतीजे पर पहूंचेगा ।

जब हम एक बार इसी नतीजे पर जा पहुंचे तो यह प्रश्न उठता है कि "अब क्या करना उचित है ?"

इसका उत्तर बहुत सहज है । इस संगति और परिस्थिति से अलग हो जाओ, जिसमें तुम रहते हो और जिसमें आमतौर पर मेहनत करनेवाले किसान और मजदूरों को 'जानवर' के नाम से पुकारा जाता है। तुम साधारण आदमियों के बीच में रहने लगो और तुम्हारा प्रश्न अपने-आप हल हो जायगा ।

: ८ :

श्रमजीवी-आन्दोलन

तुम देखोगे कि हर जगह—इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी अमेरिका आदि देशों में—जहां कहीं भी विशेष अधिकार-सम्पन्न और अत्याचार-पीड़ित लोगों के दो अलग-अलग दल मौजूद हैं, वहीं—श्रमजीवियों में एक जोरदार आन्दोलन पैदा हो रहा है। इस आन्दोलन का उद्देश्य संपत्तिशाली दल की चलाई हुई गुलामी को सदा के लिए नष्ट कर देना और न्याय तथा समानता के आधार पर एक नये समाज की नींव डालना है। अब जनसमूह का काम केवल अपनी शिकायतों के कह देने से नहीं चल सकता। उन दुःखभरे गीतों के गाने से उनको संतोष नहीं मिल सकता, जिनको पुराने जमाने के निरंकुश राजाओं के नीचे दबे हुए किसान गाया करते थे। अब लोग अपने परिश्रम का पूरा मूल्य समझते हुए काम करते हैं, यद्यपि उनके अधिकार के रास्ते में एक नहीं अनेक बाधाएं मौजूद हैं। वे सदा इसी बात पर गौर किया करते हैं कि ऐसा क्या उपाय किया जाय जिससे दुनिया में सबका जीवन सुखमय हो जाय। बजाय वर्तमान अवस्था के, जिसमें तीन-चौथाई मनुष्य-जाति का जीवन शापग्रस्त या दैवी-कोप से पीड़ित के समान हो रहा है, वे समाज-शास्त्र की कठिन समस्याओं पर विचार करते हैं और अपने निर्मल स्वाभाविक ज्ञान, अपने निरीक्षण और अपने दुःखमय अनुभव से उनको हल

करने का यत्न करते हैं। अपने ही समान दुर्दशाग्रस्त दूसरे साथियों का सहयोग प्राप्त करने के लिए वे अपना दल बनाते हैं और अपना संगठन करने की कोशिश करते हैं। वे संस्थाएं बनाते हैं, जिनका काम थोड़े-से चंदे द्वारा कठिनाई के साथ चलता है। वे दूसरे देशों में रहनेवाले अपने हम-पेशा भाइयों के साथ सम्बन्ध जोड़ते हैं, और इस प्रकार उस दिन को नजदीक लाने में, जब विभिन्न राष्ट्रों में युद्धों का होना असम्भव हो जायगा, वे शोर मचानेवाले और मौखिक सहानुभूति प्रकट करनेवाले परोपकारी सुधारकों की अपेक्षा बहुत अधिक काम कर दिखाते हैं। इस बात का पता रखने के लिए कि हमारे दूसरे भाई क्या कर रहे हैं, उनके साथ अपना परिचय बढ़ाने के लिए, अपने विचार की वृद्धि और प्रचार के लिए, वे मजदूरों के अखबार निकालते हैं और उसके लिए उनको न जाने कितनी-कितनी कोशिशें करनी पड़ती हैं।

यह कैसा कभी न रुकनेवाला संग्राम है! कितनी ही बार थक जाने, प्रतिज्ञा-भ्रष्ट हो जाने, अत्याचार का शिकार बन जाने के कारण कार्यकर्त्तागण कार्यक्षेत्र से हट जाते हैं और उनकी जगह नये कार्यकर्त्ताओं का प्रबन्ध करना पड़ता है। कभी तोपों और बन्दूकों की गोलियों से नेताओं का खातमा हो जाता है और तमाम संगठन नये सिरे से करना पड़ता है; कभी भीषण हत्या-कांड के फल से सारा काम ही चौपट हो जाता है और फिर नये ढंग से आन्दोलन शुरू किया जाता है। इन

सब कारणों से काम को बार-बार आरम्भ करने से न जाने कितनी शक्ति व्यर्थ होती रहती है।

श्रमजीवियों के अखबार उन लोगों द्वारा संचालित किये जाते हैं, जिन्होंने अपनेको आहार और निद्रा से वंचित करके थोड़ा-बहुत ज्ञान जबर्दस्ती प्राप्त कर लिया है। उनके आन्दोलनों का आधार गरीब मजदूरों से कौड़ी-कौड़ी करके इकट्ठा किया हुआ वह धन है जिसे वे जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकताओं को त्याग कर और प्रायः सूखी रोटी पर बसर करके बचाते हैं। इन-सब कामों को करने के साथ-साथ उनको सदा इस बात का भय बना रहता है कि जब कभी उनके मालिकों को इस बात का पता लग जायगा कि उनका मजदूर—उनका गुलाम—साम्यवादी हो गया है, उसी दिन से उन-के कुटुम्ब को भूखों मरना पड़ेगा।

ये बातें हैं जो तुमको दिखलाई पड़ेंगी, अगर तुम जनसमूह के भीतर जाओ। इस कभी खत्म न होने-वाले संग्राम में गरीब मजदूर कठिनाइयों के बोझ के नीचे पिसता हुआ इस प्रकार के उद्‌गार प्रकट करने लगता है—"कहां हैं वे नवयुवक जो हमारे पैसे से शिक्षित बने थे? जिनके लिए हमने, जब वे अध्ययन कर रहे थे, वस्त्र और भोजन जुटाया था! जिनके लिए हमने अपनी झुकी हुई पीठ पर भारी बोझ उठाकर और खाली पेट रहकर इन मकानों को, इन विद्यालयों को, इन अजायबघरों को तैयार किया था! जिनके लिए अपना खून सुखाकर इन बढ़िया किताबों को छापा,

जिनको हम पढ़ तक नहीं सकते ! कहां हैं वे प्रोफेसर, जो मनुष्य-समाज के विज्ञान को जानने का दावा करते हैं, पर जिनकी निगाह में एक दुष्प्राप्य कीड़े का मूल्य मनुष्य से बढ़कर है ? कहां हैं वे लोग, जो स्वाधीनता का प्रचार करते फिरते हैं पर जो कभी हमारे जैसे प्रतिदिन पैरोंतले कुचले जानेवाले लोगों की सहायता को खड़े तक नहीं होते ? ये लेखक, ये कवि, ये चित्रकार— सभी ढोंगी हैं। ये वैसे तो आंखों में आंसू भरकर सर्वसाधारण की दुर्दशा का वर्णन करते फिरते हैं, पर इतने पर भी कभी हम लोगों के पास आकर हमारे काम में मदद नहीं करते।"

इन शिक्षित कहलानेवालों में से कुछ लोग कायरतापूर्ण उदासीनता का भाव रखकर संतोषपूर्वक सुख भोगते रहते हैं, और शेष बहुसंख्यक लोग इन श्रमजीवियों को हुल्लड़बाज कहकर इनसे नफरत करते हैं और अगर कभी ये उनके विशेष अधिकारों पर हमला करना चाहें तो इनपर झपटने को सदा तैयार रहते हैं।

: ६ :

महत्वाकांक्षी नेता

यह सच है कि समय-समय पर कोई नवयुवक सामने आता है जो फौजी बाजों और मोर्चों का स्वप्न देखता और सनसनी फैलानेवाले दृश्यों और घटनाओं की तलाश में रहता है; पर जैसे ही वह देखता है कि मोर्चों की तरफ जानेवाली सड़क बहुत लंबी है और रास्ते

में वह जिन फूलों की आशा करता है उनके साथ तीखे कांटे भी लगे हैं, उसी समय वह जनता के हित की तरफ से पीठ फेर लेता है। बहुत करके ऐसे लोग महत्वाकांक्षी और आवारा आदमी होते हैं, जो अपनी पहली कोशिश में ही सफल होकर जनसमूह की सहानुभूति प्राप्त करना चाहते हैं; पर अगर कभी जनसमूह उन सिद्धांतों को अमल में लाने की कोशिश करता है जिनका ये लोग स्वयं प्रचार करते हैं; तो ये उसके कट्टर विरोधी बन जाते हैं, और अगर कभी श्रमजीवी इनकी आज्ञा के बिना आगे बढ़ने की चेष्टा करें तो ये नेता महाशय शायद उनको तोपों का निशान बनाने में भी संकोच न करें।

इतना ही नहीं, कितने ही आदमी अपनी मूर्खता के कारण जनसमूह का अपमान करने में बड़ा अभिमान तथा गरूर दिखलाते हैं और लोगों की बदनामी करके अपनी कायरता का परिचय देते हैं। जनता के विकास के शक्तिशाली आंदोलन में मध्यम श्रेणी के शिक्षित नवयुवक ऐसी ही सहायता पहुंचाते हैं!

इसपर भी तुम पूछते हो कि 'हम क्या करें?' क्या तुम नहीं देख सकते कि अभी सारा काम करने को पड़ा है? जनसमूह ने जो महत्वपूर्ण कार्य उठाया है वह इतना विशाल है कि उसमें हजारों-लाखों नवयुवकों को अपनी तरुणावस्था की समस्त शक्ति और अपनी बुद्धिमत्ता व योग्यता को काम में लगाकर सर्वसाधारण की सहायता करने का चाहे जितना मौका मिल सकता है।

: १० :

नया मार्ग

तो फिर क्या करें ? सुनो ।

अगर तुम विज्ञान के प्रेमी हो, अगर तुम साम्यवाद के सिद्धांतों को अच्छी तरह ग्रहण कर चुके हो, अगर तुम क्रान्ति के असली अर्थ को समझ चुके हो, जो इस समय भी हमारा दरवाजा खटखटा रही है, तो क्या तुम इस बात को नहीं समझ सकते कि विज्ञान को नये सिद्धान्तों के अनुकूल बनाने के लिए उसकी हरेक शाखा का पुनः संस्कार किया जाना आवश्यक है ? तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम इस क्षेत्र में इतनी बड़ी क्रान्ति उत्पन्न कर दो जितनी पिछले सौ वर्ष की समस्त वैज्ञानिक उन्नति के द्वारा भी नहीं हुई है। क्या तुम नहीं जानते कि आजकल के ऐतिहासिक ग्रंथ नानी की कहानी की तरह हैं और उनमें सिवा बड़े-बड़े बादशाहों; बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और बड़ी-बड़ी राजसभाओं या पार्लमेंटों के किस्सों के और कुछ भी नहीं है ? अब इतिहास भी नये सिरे से लिखा जाना चाहिए, जिसमें बतलाया जाय कि मनुष्य-जाति के विकास-क्रम में साधारण जनता की क्या स्थिति रही। इसी प्रकार अर्थशास्त्र, जो आजकल मालदार लोगों के लूट के धन को पवित्र सिद्ध करने का साधनमात्र बना हुआ है, फिर से तैयार किया जाना चाहिए। उसके मूल सिद्धान्त और असंख्य प्रयोग का आधुनिक रीति से निर्णय होना

चाहिए। इसी प्रकार मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, नीति-शास्त्र में पूरी तरह से परिवर्तन होना चाहिए और प्राकृतिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में भी आधुनिक विचारों के अनुसार पूर्ण सुधार किया जाना आवश्यक है।

बहुत अच्छा, अब तुम कार्य आरम्भ करो। अपनी योग्यता को महान् उद्देश्य की पूर्ति में लगाओ। खासकर अपनी प्रखर तर्क-शक्ति से हमारे अंध-विश्वासों को दूर करने में तथा अपनी संयोगात्मक योग्यता से हमारे उत्कृष्ट संगठन को नींव पक्की करने में हमारी सहायता करो इतना ही नहीं, हमको हमारे प्रतिदिन के विवाद में निर्भयता की उस भावना से काम लेना सिखलाओ जो वैज्ञानिक गवेषणा का मुख्य लक्षण है, और जिस प्रकार प्राचीनकाल के वैज्ञानिक अपने जीवन के उदाहरण से दिखला गये हैं उसी प्रकार तुम भी हमको दिखलाओ कि मनुष्य किस तरह सत्य की रक्षा के लिए अपने प्राण तक दे सकता है।

अगर तुम डाक्टर हो और तुमने कटु अनुभव से साम्यवाद की सचाई को जान लिया है तो तुम्हारा कर्त्तव्य है कि बिना किसी तरह की देर किये निरन्तर हमको बतलाते रहो कि अगर मनुष्यों के रहन-सहन और मजदूरी की वर्तमान अवस्था कायम रही तो मनुष्य-समाज तेजी के साथ पतन की ओर अग्रसर होता जायगा। तुम जनता को समझाओ कि जबतक मनुष्यों की उत्पत्ति और वृद्धि ऐसी परिस्थिति में होती रहेगी जो स्वास्थ्य-रक्षा के वैज्ञानिक नियमों के सर्वथा प्रति-

कूल है, तबतक डाक्टरों की सब दवाइयां रोगों को मिटा सकने में असमर्थ रहेंगी। लोगों को विश्वास दिलाओ कि यही रोगों का असली कारण है और आवश्यकता है कि इसको जड़ से उखाड़कर फेंक दिया जाय। साथ ही लोगों को यह भी बतलाओ कि ये कारण कैसे मिटाये जा सकते हैं।

अपने चाकू को लेकर आओ और ऊंचे हुए हाथ से हमारे इस समाज में नश्तर लगाओ जो बड़ी तेजी से गलता और सड़ता जा रहा है। लोगों को बतलाओ कि बुद्धिमानी के साथ जीवन व्यतीत करने का मार्ग क्या है और वह कैसे प्राप्त हो सकता है? एक सच्चे चिकित्सक की भांति इस बात पर जोर दो कि निर्जीव अंग को काट डालना आवश्यक है, नहीं तो वह सारी देह में विष उत्पन्न कर देगा।

अगर तुमने यंत्र-विद्या और आधुनिक शिल्पकला का अभ्यास किया है तो यहां आकर हमें बतलाओ कि तुम्हारे आविष्कारों का क्या नतीजा निकला। अभीतक जो लोग भविष्य के कार्यक्रम पर चलने का साहस नहीं करते उनको विश्वास दिलाओ कि इस समय तक मनुष्य-जाति जितना ज्ञान प्राप्त कर चुकी है उसी ज्ञान से बड़े-बड़े आविष्कार किये जा सकते हैं। उनको समझाओ कि अगर कल-कारखानों का संगठन सुधार दिया जाय तो आश्चर्यजनक फल प्राप्त हो सकता है। अगर सब लोग सदा मनुष्य-जाति के हित का खयाल रखकर चीजें उत्पन्न करें तो पैदावार कई गुना बढ़ सकती है।

अगर तुम कवि, चित्रकार, मूर्त्तिकार या संगीतज्ञ हो और तुम अपने सच्चे कर्त्तव्य को पहचानते हो, अपनी कला के वास्तविक हित को समझते हो तो हमारे पास आओ। अपनी कलम, अपनी पेन्सिल, अपनी छेनी और अपने विचारों को क्रांति की सेवा में लगाओ। अपनी उत्साहजनक रचना या अपने भावपूर्ण चित्रों द्वारा उस वीरतापूर्ण संग्राम का दिग्दर्शन कराओ जिसमें जनसमूह अत्याचारियों के विरुद्ध लड़ रहा है। नवयुवकों के हृदय में उस श्रेष्ठ क्रांतिकारी उत्साह की आग भर दो जिससे हमारे पूर्वजों की आत्माएं उत्तेजित हुआ करती थीं। स्त्रियों को समझाओ कि जो पति अपना जीवन मनुष्य-जाति के उद्धार के महान कार्य में उत्सर्ग कर देता है उसका जीवन धन्य है। लोगों को इस बात का खयाल दिलाओ कि उनका वर्तमान जीवन कैसा वीभत्स बन गया है और इस बुराई के कारणों को भी उनको बतलाओ। जनता को समझाओ कि हमारा जीवन कैसा उत्तम बन सकता है; अगर हमारे मार्ग में से वे बाधाएं दूर हो जायं जो वर्तमान सामाजिक संगठन की मूर्खतापूर्ण और लज्जाजनक प्रथाओं की वजह से पैदा होती है।

अन्त में तुम सब लोग, जिनके पास ज्ञान, भाषण शक्ति, योग्यता तथा परिश्रम के गुण हैं, अगर तुम्हारे भीतर सहानुभूति का एक भी कण है तो, स्वयं आओ और अपने मित्रों को भी लाओ और अपनी सेवाओं को उन लोगों के लिए अर्पण करो जिनको उसकी सबसे

अधिक आवश्यकता है। पर इतना अवश्य याद रक्खो कि अगर तुम आते हो तो मालिक बनकर नहीं आते, बल्कि एक साथी को, एक सखा की, एक दोस्त की हैसियत से आते हो। तुम हुकूमत करने के लिए नहीं आते, एक नये जीवन में प्रवेश करके स्वयं शक्ति प्राप्त करने के लिए आते हो, जिससे भविष्य में तुम उन्नति कर सकोगे और विजय प्राप्त कर सकोगे। तुम्हारा काम केवल लोगों को उपदेश देने का नहीं है, बल्कि तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है उनकी आकांक्षाओं को ग्रहण करने का, उनको उचित रूप देने का, और तब उन्हें कार्यरूप में परिणत करने का। यह कार्य तुमको बिना किसी तरह के आराम या जल्दबाजी के अपनी तरुण अवस्था के समस्त उत्साह और जीवन-भर के अनुभव को लगाकर पूर्ण करना होगा। केवल ऐसा करने से ही तुम सर्वांग-पूर्ण श्रेष्ठ और विवेक के अनुकूल जीवन व्यतीत कर सकते हो। तब तुम देखोगे कि इस मार्ग में किये हुए तुम्हारे सब प्रयत्न पूरी तरह से फलीभूत हो रहे हैं। और जब एक बार तुम्हारे कर्म और तुम्हारी अन्तरात्मा की आज्ञा में इस प्रकार की उच्च श्रेणी की एकता पैदा हो जायगी तो इससे तुमको ऐसी शक्तियां प्राप्त होंगी जिनकी तुम कभी कल्पना भी न कर सके होगे और जो अभीतक तुम्हारे भीतर सोई पड़ी हुई हैं।

इस प्रकार तुम जनसमूह के साथ रहते हुए सत्य, न्याय और समानता के लिए कभी न रुकनेवाला संग्राम कर सकोगे और उनके द्वारा सर्वसाधारण को

अपना एहसानमंद बना सकोगे। किसी भी जाति के नवयुवक इससे बढ़कर और किस श्रेष्ठ जीवन की आकांक्षा कर सकते हैं।

इतनी देर बाद मैं धनवान और ऊंची श्रेणीवालों को यह समझा सका कि तुम्हारे जीवन में जो दुविधा पैदा होती है उससे छूटने के लिए तुमको लाचार होकर—अगर तुम साहसी और सत्य के प्रेमी हो—साम्यवादियों के पास आना होगा, उनके साथ रहकर काम करना पड़ेगा और उनके दलभुक्त होकर सामाजिक क्रांति की सफलता के लिए उद्योग करना पड़ेगा। अब मालूम होता है कि यह सिद्धांत कैसा स्वाभाविक और सहज में समझ में आने लायक है; पर जब हम एक ऐसे आदमी को समझाना चाहें जिसपर धनवानों के पक्ष-पातियों की बातों और कामों का पूरा प्रभाव पड़ चुका है तो यह आवश्यक है कि कितने ही मिथ्या तर्कों का खंडन किया जाय, कितने ही पक्षपात-जनित भावों को मिटाया जाय, और कितने ही स्वार्थयुक्त एतराजों को दूर किया जाय।

: ११ :

गरीब श्रेणीवाले

अब हम गरीब श्रेणी के नवयुवकों से कुछ कहना चाहते हैं। पर आजकल इसके लिए बहुत विस्तारपूर्वक समझाने की जरूरत नहीं; क्योंकि चाहे तुममें बुद्धि और साहस की मात्रा बहुत कम हो, पर घटनाओं के दबाव

में पड़कर तुमको खुद ही साम्यवादी बनने को लाचार होना पड़ेगा।

जो व्यक्ति श्रमजीवी या गरीब श्रेणी में उत्पन्न होकर अपनी शक्ति साम्यवाद की विजय के लिए खर्च नहीं करता वह यह भी नहीं समझता कि स्वयं उसका हित किस बात में है और साथ ही वह अपने कर्त्तव्य और प्राचीन काल से चले आये उत्तरदायित्व से भी विमुख रहता है। क्या तुमको वह समय याद है जब तुम बिलकुल बच्चे थे और जाड़े के मौसम में एक दिन अपने छोटे-से आंगन में खेल रहे थे? उस समय तुम्हारे पतले कपड़ों के भीतर घुसकर ठंड तुमको काट रही थी और तुम्हारे फटे जूतों के भीतर मिट्टी भरी जाती थी। उस समय तुमने कुछ मोटे-ताजे लड़कों को खूब बढ़िया कपड़े पहनकर बाहर सड़क पर जाते देखा, और यह भी देखा कि वे तुम्हारी तरफ उपेक्षा के भाव से देखते हैं। उस दशा में भी तुम अच्छी तरह जानते थे कि चाहे वे छोकरे बढ़िया-से-बढ़िया कपड़े पहन रहे हों, पर बुद्धिमानी में, समझदारी में और काम करने को शक्ति में वे तुम्हारे या तुम्हारे साथियों के बराबर नहीं हैं, पर उसके बाद तुमको लाचारी से एक गंदे कारखाने में बंद रहकर सुबह पांच-छः बजे से शाम तक बारह घंटे मशीन पर काम करना पड़ा और वर्षों तक प्रतिदिन मशीन की अविराम गति और कर्कश स्वर के साथ में रहकर इसी प्रकार पिसना पड़ा। इस बीच में वे मोटे-ताजे लड़के बिना किसी तरह की चिंता-

फिक्र के स्कूलों, कालेजों और विद्यालयों में शिक्षा पाते रहे। और वही लड़के, जो तुमसे बुद्धि में हीन हैं पर जिनको अच्छी तरह से शिक्षा मिली है, अब तुम्हारे स्वामी बने हुए हैं और जीवन के सब सुखों तथा सभ्यता के सब साधनों का आनंद के साथ उपभोग कर रहे हैं।

पर तुम्हारा आजकल क्या हाल है ? तुम हर रोज काम से लौटकर एक छोटे-से अंधेरे और सील से भरे हुए घर में आते हो, जिसमें थोड़ी-सी जगह के भीतर पांच-छः आदमियों को जानवरों की तरह पड़े रहना पड़ता है। उसी कोठरी में तुम्हारी मां, जो जिन्दगी से बेजार हो चुकी है और ज्यादा उमर हो जाने से नहीं बल्कि चिंताओं के कारण बूढ़ी हो चुकी है, तुमको सूखी रोटी और पानी जैसी दाल खाने को देती है। तुम्हारे सामने सोचने-विचारने के लिए केवल एक ही सवाल रहता है—"मैं कल दुकानदार को आटे का दाम कहां से दूंगा और परसों मकानवाले का भाड़ा कहां से चुकाया जायगा ?"

क्या तुम उसी प्रकार का दुःखमय जीवन व्यतीत करना चाहते हो, जैसा तुम्हारे माता-पिता तीस-चालीस वर्ष तक भोग चुके हैं ? क्या तुम दूसरे लोगों को शरीर, ज्ञान और कला-कौशल-संबंधी सब प्रकार के सुख पहुंचाने के वास्ते इसी प्रकार तमाम उमर परिश्रम करते रहोगे और तुम स्वयं अनंतकाल तक इसी चिंता में फंसे रहोगे कि खाने को रोटी मिलेगी या नहीं ? क्या

थोड़े-से आदमियों को सब प्रकार का ऐश-आराम का सामान मिलता रहे, इसलिए तुम स्वयं सदा के लिए उन वस्तुओं से वंचित रहोगे जिनसे जीवन का आनन्द प्राप्त होता है। क्या तुम परिश्रम द्वारा अपनेको शक्ति-हीन बना लोगे और उसके बदले में जब कठिनाई का समय आये, दुःख भोगना स्वीकार करोगे? क्या तुम इसी तरह की जिन्दगी बसर करना चाहते हो?

शायद तुम इसके लिए भी राजी हो जाओ! तुमको जैसी दशा में रहना पड़ता है उससे बाहर निकलने का कोई मार्ग न देखकर शायद तुम कहने लगोगे कि—"सारी दुनिया इसी प्रकार की दशा में फंसी हुई है, और जब मैं इस दशा में कुछ परिवर्तन नहीं कर सकता तो मुझे भी इसे बर्दास्त करना चाहिए। ऐसी दशा में यही उचित है कि हम परिश्रम करते रहें और जिस प्रकार बन सके जिन्दा रहने की कोशिश करें।"

बहुत अच्छा! अगर तुम्हारा यही विचार है तो किसी दिन जीवन की घटना स्वयं तुम्हारी आंखें खोल देगी!

एक दिन किसी तरह का व्यापार-संकट आता है—उस तरह का व्यापार-संकट नहीं, जैसे पहले जमाने में आते रहते थे और जो थोड़े-बहुत दिनों में खत्म हो जाते थे, वरन् एक ऐसा व्यापार-संकट उपस्थित होता है जो किसी खास व्यापार, कारीगरी को पूरी तरह से नष्ट कर डालता है, जो हजारों मजदूरों को दुर्दशा में फंसा देता है, जो पूरे कुटुम्बों का नामोनिशान मिटा देता

है ! तुम भी दूसरे लोगों की तरह इस आफत से बचने के लिए हाथ-पैर मारते हो। पर शीघ्र ही तुम देखोगे कि किस प्रकार तुम्हारी स्त्री, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे नाते-रिश्तेदार धीरे-धीरे भूख की ज्वाला से पीड़ित होते हैं और तुम्हारी आंखों के सामने ही काल के ग्रास बन जाते हैं। सिर्फ भोजन के अभाव से खबरदारी और दवादारू की कमी के कारण वे अपना जीवन एक टूटी चारपाई पर समाप्त कर देते हैं, पर उस समय भी मालदार लोग बड़े-बड़े शहरों की सुंदर सड़कों पर सजे हुए महलों के भीतर जिन्दगी के मजे उड़ाते हैं और उन भूखे रहनेवालों और मरनेवालों का कभी भूलकर भी खयाल नहीं करते। तब तुम समझोगे कि वर्तमान समाज कैसा घृणित बन गया है। तब तुम व्यापार-संकट के कारणों पर विचार करने लगोगे और अपनी जांच-पड़ताल के द्वारा तुम इस निंदनीय प्रथा का भेद पूरी तरह से समझ जाओगे जिसके कारण लाखों मनुष्यों को थोड़े-से निकम्मे और तुच्छ लोगों के लालच का शिकार बनना पड़ता है और उनकी कृपा पर निर्भर रहना पड़ता है। तब तुम समझोगे कि साम्य-वादियों का यह कहना बिलकुल सच है कि वर्तमान मनुष्य-समाज का अवश्य ही सिर से पैर तक फिर से संगठन किया जाना चाहिए और ऐसा संगठन किया भी जा सकता है।

अब हम इस सार्वजनिक व्यापार-संकट की बात को छोड़कर तुम्हारी व्यक्तिगत मिसाल पर विचार

करते हैं। एक दिन तुम्हारा मालिक तुम्हारी मजदूरी और भी घटाने की कोशिश करता है, जिससे तुम्हारे जरिये वह दो-चार आने ज्यादा कमा सके और अपने धन-भंडार को और ज्यादा बढ़ा सके। तुम इस अन्याय का विरोध करोगे, पर वह घमंड के साथ जवाब देगा—"निकल जाओ और घास खाओ, अगर तुम इतनी मजदूरी पर काम नहीं करना चाहते।" तब तुम समझोगे कि तुम्हारा मालिक तुमको केवल भेड़ की तरह मूंडना ही नहीं चाहता बल्कि वह सचमुच तुमको एक नीचे दर्जे का जानवर भी समझता है। वह तुमको नौकरी के जरिये अपने निर्दय पंजे में रखने से ही संतुष्ट नहीं है, बल्कि वह चाहता है कि तुमको पूरी तरह से अपना गुलाम बनाकर रखे। उस वक्त या तो तुम उसके सामने सिर झुका दोगे, मनुष्यत्व के गौरव के भाव को तिलांजलि दे दोगे और हर तरह के बड़े-से-बड़े अपमान को सहते हुए तुम्हारा जीवन समाप्त होगा, अथवा तुम्हारा खून गर्म हो उठेगा, तुम अपने भीषण पतन को देखकर कांप उठोगे और उस अभिमानी को जैसे-का-तैसा जवाब सुना दोगे। तब तुमको नौकरी से अलग होकर रास्ते में मारा-मारा फिरना पड़ेगा और तुम समझ जाओगे कि साम्यवादियों का यह कहना ठीक है कि "उठ खड़े हो और आर्थिक गुलामी के खिलाफ विद्रोह का झंडा ऊंचा करो।" तब साम्यवादियों के पास जाओगे और उनके दल में स्थान ग्रहण करके इस बात का उद्योग करोगे कि जिससे

आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक—सब प्रकार की गुलामी पूरी तरह से नष्ट हो जाय।

: १२ :

स्त्रियां

किसी दिन तुम उस मनोहारिणी युवती का किस्सा सुनोगे जिसकी सुन्दर चाल, निष्कपट बर्ताव तथा मीठी बोल-चाल को देखकर तुम्हारा हृदय प्रसन्न हुआ करता था। वह वर्षों तक अपनी दशा सुधारने के लिए हर तरह का यत्न करती रही, पर अन्त में निरुपाय होकर किसी बड़े शहर में चली आई। वह जानती थी कि ऐसी जगह में गुजारा कर सकना बड़ा कठिन होता है, तो भी उसे उम्मीद थी कि मेहनत-मजूरी करके कम-से-कम वह अपने पेट का पालन कर सकेगी, पर क्या तुम जानते हो कि उसका क्या परिणाम हुआ? किसी मालदार नौजवान ने उसे मीठी-मीठी बातों से फुसला लिया और उसने अपना सर्वस्व उस युवक को अर्पण कर दिया, पर थोड़े ही दिन बाद वह दूध की मक्खी की भांति निकालकर फेंक दी गई और उसके सिर पर एक बच्चे का बोझ भी आ पड़ा! वह बड़ी हिम्मत-वाली स्त्री थी और वह बराबर बाधाओं का मुकाबला करती रही; पर अन्त में भूख और ठण्ड की मार को न सह सकने से उसके स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया और एक खैराती अस्पताल में उसने अपनी जीवन-लीला समाप्त की।

गरीब श्रेणी की बहनो ! क्या ऐसी घटनाओं को देखकर तुम शांत बनी रहोगी और इसका कोई प्रतिकार न करोगी ? जब तुम बच्चे को दूध पिलाती हो और उसके छोटे-से सिर पर हाथ फेर-फेरकर प्यार करती हो तब क्या तुम कभी इस बात का भी खयाल करती हो कि अगर समाज की वर्तमान दशा में परिवर्तन न हुआ तो बड़ा होने पर उसको कैसे दुःख भोगने होंगे ? क्या तुम कभी इस बात पर गौर नहीं करतीं कि तुम्हारी छोटी बहनों और तुम्हारी सन्तान को भविष्य में क्या-क्या सहन करना पड़ेगा ? क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारे लड़के भी उसी प्रकार घास-पात की तरह पैदा होकर नष्ट हो जायं, जैसे तुम्हारे बाप-दादे हो चुके हैं ? उनको सदा इसी बात की चिन्ता बनी रहे कि कल रोटी कहां से मिलेगी ? उनके दिल बहलाने के लिए सिवाय ताड़ी की दुकान के और कोई स्थान न हो ? क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारे पति और पुत्र सदा के लिए उस व्यक्ति की कृपा के भिखारी बने रहें जिसे उत्तराधिकार में अपने बाप की सम्पत्ति मिल जाय और जो उनको नौकर रखकर लाभ उठा सके ? क्या तुम यही पसन्द करती हो कि वे किसी बड़े आदमी के गुलाम बने रहें, बन्दूकों के शिकार होते रहें और दूसरे का माल हड़प करनेवाले धनवानों की लाभ की खेती में सदा की तरह अपने हाड़-मांस को लगाते रहें ?

नहीं, कभी नहीं ! मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारा खून खौलने लगता है, जब तुम देखती हो कि

तुम्हारे पति बड़ी उत्तेजना और दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ हड़ताल आरम्भ करके अन्त में हाथ जोड़कर अभिमान से फूले हुए मालिक की अत्यन्त अपमानपूर्ण शर्तों को मंजूर कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि तुम उन वीर क्षत्राणियों को आदर्श मानती हो जिन्होंने स्वाधीनता की रक्षा के लिए घोर संग्राम में अपने सिर कटाये हैं। मुझे निश्चय है कि तुम उन स्त्रियों को आदर की निगाह से देखती हो जिन्होंने अत्याचारी हाकिमों को मारकर गरीब जनता पर किये जानेवाले अन्यायों का बदला लिया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब तुम विदेशों की उन स्त्रियों का वर्णन पढ़ती हो जिन्होंने राज्य-क्रांति के समय गोले-गोलियों की झड़ी में खड़ी रहकर अपने घरवालों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उत्साहित किया था तो तुम्हारा दिल उत्साह से उछलने लगता है।

× × ×

इसलिए गरीब श्रेणी के नौजवानो, पुरुषो और स्त्रियो, किसानो और मजदूरो, कारीगरो और सिपाहियो! तुम सब अपने अधिकारों को समझो और हमारे साथ चलने को तैयार हो! तुम आओ और अपने भाइयों के साथ मिलकर उस महान् क्रांति की तैयारी के लिए उद्योग करो, जो गुलामी के नाम-निशान को मिटा देगी, बेड़ियों को टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देगी, और समस्त मनुष्य-जाति के लिए एक नवीन और विस्तृत सुखी जीवन का मार्ग खोल देगी—उस क्रांति के लिए जो अन्त में समस्त मनुष्य-समाज के बीच सच्ची

स्वाधीनता, वास्तविक समानता और द्वेषरहित भ्रातृ-भाव की स्थापना करेगी; उस क्रांति के लिए, जो सबसे काम करावेगी और सबको काम करने का अवसर देगी, जिसके द्वारा मनुष्य अपने परिश्रम का फल पूरी तरह आनन्द के साथ उपभोग कर सकेंगे, उनकी शक्तियों का पूर्णरूप से विकास हो सकेगा और सबका जीवन विवेकयुक्त, मनुष्यत्व के अनुकूल और सुखी होगा।

किसीको यह कहने का मौका मत दो कि हम लोग संख्या में बहुत थोड़े हैं और इसलिए उस महान् कार्य को सिद्ध करने के लिए, जो हमारा लक्ष्य है, बहुत कमजोर हैं।

गिनती करके देखो कि जो लोग इन अत्याचारों को सह रहे हैं वे कितने अधिक हैं।

हम किसान, जो दूसरों के लिए मेहनत करते हैं और जो धनवानों को गेहूं खिलाकर खुद छिलका खाते हैं,—हम लोग गिनती में करोड़ों हैं।

हम मजदूर और जुलाहे रेशम और मलमल बुनते हैं, पर खुद चिथड़े लपेटकर रहते हैं; हम भी बहुत बड़ी संख्या में हैं। जब कारखानों की छुट्टी की सीटी बजती है तो हम बड़े-बड़े शहरों की सड़कों और चौकों को समुद्र की लहरों की तरह भर देते हैं।

हम सिपाही, जो अफसरों के हुक्म या डण्डों के द्वारा चलाये जाते हैं, जो गोलियों को अपने ऊपर लेते हैं पर उनके बदले में हमारे अफसरों को मेडल और पेंशन मिलती हैं, जिनको अपने ही भाइयों के ऊपर

गोली चलाने के सिवाय और कोई अच्छा काम नहीं आता—हम भी इतनी बड़ी तादाद में हैं कि जिस दिन हम इन मोटे-ताजे और सजे हुए अफसरों के सामने, जो हमपर बड़ी शान के साथ हुक्म चलाते रहते हैं, सिर ऊंचा करके खड़े हो जायंगे तो इनके चेहरे बिलकुल पीले पड़ जायंगे।

सचमुच हम सब लोग, जो हररोज अन्याय सहते हैं और अपमानित किये जाते हैं, मिलकर इतनी बड़ी संख्या में हैं, जिसका कोई शुमार नहीं। हम उस महासमुद्र के समान हैं जो सबको अपने में मिला लेता है, सबको निगल जाता है।

जिस दिन हम उपर्युक्त बातों के करने का दृढ़ निश्चय कर लेंगे, उसी क्षण न्याय स्थापित हो जायगा और उसी समय संसार के अत्याचारी धूल में मिल जायंगे।

युवकोपयोगी अन्य पुस्तकें

१. अहिंसा की शक्ति
२. सर्वोदय की बुनियाद
३. सर्वोदय का घोषणापत्र
४. भूदान-यज्ञ
५. सर्वोदय-विचार
६. क्रांति की भावना
७. रोटी का सवाल
८. बुराई कैसे मिटे ?
९. सामाजिक कुरीतियां
१०. जीवन-साधना
११. मूरखराज
१२. कितनी जमीन

५०[redacted] न० पै०